आखों के झरने
काव्य संग्रह
हेमलता शर्मा
अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

आँखों के झरने

काव्य संग्रह

हेमलता शर्मा

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN - "978-93-5372-062-9"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संपादक- प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक - संदीप कुमार सोनी

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५६

मोबाईल- ६४२४७६५२५६

अणुडाक - antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना - www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण - २०१६, **हेमलता शर्मा**

आवरण चित्र - **संदीप सोनी, वारासिवनी**

मूल्य - ६०.०० रूपये

मूद्रक- **शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी**

AAKHON KE JHAREN BY HEMLATA SHARMA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

मेरा जन्म विजयादशमी सन १९६५ में देवरी ग्राम जिला रायसेन में साधारण ब्राम्हण परिवार में हुआ पिताजी श्री रामेश्वर दयाल शर्मा रिटायर शिक्षक माता श्रीमती वसंतकुमारी सरल मृदु स्वभाव की हैं देवरी पहाड़ी तालाब खेतों से घिरा प्राकृतिक सौंदर्य से पूर्ण ग्राम है मैं पांच बहन भाइयों में सबसे बड़ी हूं मेरा नाम हेमलता शर्मा है मेरी स्कूली शिक्षा आठवीं तक ही हुई पर पढ़ने की ललक ने संघर्ष करते हुए हिंदी साहित्य से M.A. प्राइवेट किया आज मैं शासकीय शिक्षिका हूं मेरा विवाह पुण्य सलिला मां नर्मदा के तट पर बसा छोटा सा गांव पीपल पानी में श्री पंडित हंसराज राजोरिया शास्त्री के पुत्र श्री राजेंद्र कुमार शर्मा बैंक मैनेजर के साथ हुआ मेरी चाल संतान अभिषेक अभिलाषा रिचा अभिजीत हैं मैं दो बच्चों की नानी एक बच्ची की दादी हूं मेरे अंदर कविता बचपन से ही था किसी घटना से जब हृदयत या आह्लादे होता तो रचना अपने आप प्रस्फुटित हो जाती थी पर सहेज कर नहीं रखा मेरे शिक्षक मित्र वेणी शंकर साहित्यकार की प्रेरणा से रचनाओं को सहेजना शुरू किया मेरे शिक्षक मित्र श्री प्रफुल्ल दीक्षित जी ने सहयोग किया मेरे बच्चों ने भी मुझे प्रोत्साहित किया मेरी भतीजी सामान पूजा विश्वकर्मा ने मुझे अंतरा शब्दशक्ति ग्रुप से जोड़ा और प्रीति सुराना जी की बहुत आभारी हूं जिन्होंने पुस्तक छापने में मेरा सहयोग एवं मार्गदर्शन किया। बहुत आभारी हूं मेरे पति की जिन्होंने मुझे समाज की रूढ़िवादी विचारधारा से बाहर निकालकर साहित्य के क्षेत्र में आगे कदम बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया एवं कदम कदम पर मेरा सहयोग किया मैंने बेटी बहू पत्नी मां का फर्ज

अच्छी तरह से निभाया अब मेरा और मेरे पति का जीवन समाज सेवा में समर्पित है एवं स्कूल में बच्चों को शिक्षा देने के लिए समर्पित है।

वस्तुतः मेरी रचनाएं क्रांतिकारी सोच एवं व्यापम होती हैं जब धर्म और समाज का स्तर गिरता देखती हूं तो मेरी कलम चल पड़ती है मेरी समर्पित सेवाभावी सोच का सफल है कि मैं सर्व ब्राह्मण महिला महासभा की इकाई के महत्वपूर्ण पद पर कार्य कर रही हूं साथी प्रजापिता ब्रह्माकुमारी संगठन में भी मुझे सेवा करने का सुअवसर प्राप्त है वर्तमान साहित्य जगत में स्वर व सुंदरता को अधिक महत्व देने की सकीम मनोवृत्ति के बीच अपने उज्जवल एवं समसामयिक रचनाओं के माध्यम से सभी का निर्मल स्नेह प्राप्त है।

हेमलता शर्मा

अनुक्रमणिका

1.	मुक्तक	7
2.	कालचक्र	8
3.	माँ नर्मदा	9
4.	नारी शक्ति	10
5.	अनंग	11
6.	श्रमिक	12
7.	सच्चे भगवान	13
8.	बेचारी बच्चियाँ	14
9.	नव वर्ष	15
10.	कूप मंडूक	16
11.	इत्तेफाक	17
12.	आजादी	18
13.	पतझड़ का रहस्य	19
14.	अब नहीं रही	20
15.	ठंड के रंग बेढंग	21
16.	चूड़ियाँ	22
17.	बरखा	23
18.	वो दिन	24
19.	नारी	25
20.	कभी-कभी	26
21.	नशे ने उजाड़ दी	27

22.	गुरु के आदर्श	28
23.	मानव जीवन पथ	29
24.	किसान	30
25.	बेटी की विदाई	31
26.	मध्यप्रदेश	32

मुक्तक

आप बन के सूर्य वंशी, दर्शन सूर्य को देने लगे।
लंका विजय उत्सव भी, अमावस्या को मनाने लगे।
अपराध क्या था मेरा, जो प्रतीक्षा कराई एक मास,
हो कर व्यथित चंद्र, उलाहना राम को देने लगे।१।

जन्म लेकर के द्वापर में, प्रेम की वंशी बजाऊँगा।
हरूँगा भार भूमि का, चंद्र वंशी कहाऊंगा।
मेरे तो सूर्य चंद्र दोनों, आँखों के तारे है,
पर त्रेता से ही मैं, रामचंद्र कहाऊंगा।२।

सबरी भजें राम-राम, फूल चुने सुबह शाम।
बुहारत हैं गली-गली, थके न करे आराम।
प्रेम से खिलावत हैं, बेरन को चख-चख,
राज-पाट तज राम, आए भिलनी के धाम।३।

प्रेम पाग पगी मीरा, श्याम रंग रंगी रंगी।
छोड़ छाड जग लाज, चली प्रेम गली गली।
पी गई विष का प्याला, नाम लेके श्याम का।
विष की भई सुधा, खिली मन कली कली।४।

मथुरा को गये श्याम, कुब्जा लये बस में करी।
श्यामा भई बाबरी, वंशी मे ढूंढ़ रही।
राधा के बिरह श्याम, नयन जल धार बहे,
राधा को मुरली दे, मुरली न अधर धरी।५।

कालचक्र

मेरे हाथ से छीनी गुड़िया,
सखी और सहेलियां,
मां का आंचल,
स्नेह भरी अखियां,
चोर, डाकू, लुटेरे, तुम कौन हो?

बेटों की आती है पात्तियां,
बेटियों की राखियां,
किसको खिलाऊं गुजियां
चोर, डाकू, लुटेरे, तुम कौन हो?

खुशियों से रीति तिजोरीयां,
नहीं सुनाती किलकारियां,
रह गई बस दूरियां।
चोर, डाकू, लुटेरे, तुम कौन हो?

आंखों में छा रही डोरियां
चेहरे पर हो रही झुर्रियां,
कोई सुनता नहीं कहानियां।
चोर, डाकू, लुटेरे, तुम कौन हो?

हाँ! तुम कालचक्र हो...!

मां नर्मदा

अमरकंटक में जन्मी मां नर्मदा,
महिमा मुनि गण लिख गए।

मेकलसुता के दर्श से हो परमानंद,
पापियों के पाप सारे धुल गए।

देख माता की दशा रोता है मन,
वह गंदगी रेवा किनारे कर गए।

स्वच्छता कि हम चलाएं मुहिम,
संरक्षण को हाथ लाखों उठ गए।

ना रहेगा प्रदूषण अब घाट पर,
बरसों के मुंदे नयन अब खुल गए।

निर्मल जल से तृप्त हो धानी धरा,
तो अन्न के भंडार सारे भर गए।

उत्खनन अब बंद हो गए रेत का,
माफिया शिव कोपसे जो डर गए।

स्वच्छ आंचल रहे मां का सर्वदा,
मां के लिए हम जो कुछ कर गए।

नारी शक्ति

तू सरस्वती, तू पार्वती, तू ही माता जगदंबे।
तू कालरात्रि, तू शैलपुत्री, माता स्कंद जगदंबे।

स्फुरित हो जड़ से नरसिंह खंभे,
बन शारदे वह ज्ञान दे,
सुप्ता अवस्था से जागृत कर,
जल थल अंबर सारे।

बन चंडिका पीजा लहू,
जो कु दृष्टि तुझ पर डारे।
दुष्टों की कर तू दुर्गति,
दुर्गा रूप धरा पर धारे।

छीन ले तू प्राण पति के,
ठान कर यमराज से।
सावित्री बन जा याशिवा,
जो कलुषित कलि को संघारे।

नारी है तू नारायणी,
अब प्रेम सुधा की धार दे।
अन्नपूर्णा बन जगत में,
रिद्धि सिद्धि भंडार दे।

कर्म से निज धर्म से,
विश्व करे तुझको नमन।
कार्य प्रगट योगा अग्नि से,
जो पापियों को जार दे।

अनंग

आया जब भी अनंग, जन-जन में उमंग।
छाया चहूं और रास, जग हर्षित है।

सुरभित है सुमन मंद मंद चले पवन।
अमवा के बौरन से, महि महकत है।

केसरिया हैं विहंग, केसरिया अंग अंग।
अंगरा सो केसरिया, पलाश दहकत है।

सुन कोयल की कूक, उठे हृदय मैं हूक।
प्राण धन राधा के, मथुरा बसत है।

शशि की सलोनी छवि, सर प्रतिबिंब लखि।
वनदेवी सिंगार हेतु, मानो दर्पण है।

तप छूटे साधु संत, मोहित है दिग दिगंत।
नैन मिला सुनैनी से, मुख निरखत है।

कर से छूटी माल, पंच सर है विशाल।
अनंग सौंदर्य देख, देव धरा उतरत है।

श्रमिक

हंसिया खुरपी लिये,
किसी कृषक के खेत में।
श्रम बिन्दु वह बोता है,
क्षुधा शांत होती,
जिससे संसार की,
वही पाई पाई के लिए रोता है,
वह भूखा सोता है,
क्योंकि वह श्रमिक होता है।

जोड़कर ईंट-ईंट,
अट्टालिकाये गगनचुंबी,
जग के लिए बनाता है,
चिथड़े लपेटे गुदड़ी में,
उसी का बच्चा,
गगन तले धरा पर सोता है,
मकान नहीं होता है,
क्योंकि वह श्रमिक होता है।

बस रेल जहाज,
यातायात के साधन,
नित नये बनाता है,
इस शहर से उस शहर,
पेट की खातिर,
पांव-पांव चलता है,
किराया नहीं होता है,
क्योंकि वह श्रमिक होता है।

सच्चे भगवान

कल फिर आना तुम,
प्रकृति की नई कोंपलों से,
शाला के सच्चे भगवान,
कल फिर आना तुम।

नन्ही उंगलियों से टेढ़ी-मेढ़ी,
आकृतियां बनाना,
राग द्वेष से परे,
नईदुनिया गढना,
नवराष्ट्र के सिरजनहार,
कल फिर आना तुम।

तुम्हारे आते ही,
मधुरता छाना,
नटखट मुस्कान से,
सब के दुखों को भुलाना,
भोले रचनाकार,
कल फिर आना तुम।

बेचारी बच्चियाँ

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ,
और ये मंदिर।
क्यों मंदिर मै नजर आती हैं,
भिखारी बच्चियाँ।

नंगे पांव तम तमाया फर्स,
चिल चिलाती धूप दौड़ती बच्चियाँ।

वेलगाम सी गाडियां, और ढलान,
दुर्घटना से अनजान लाचार बच्चियाँ।

दुराचारी और गंदी नजर,
आसुरक्षित मासूम बच्चियाँ।

ढलती शाम और अधेंरे का साया,
गुम हो जाती मायूस बच्चियाँ।

अशिक्षा और नशेड़ी माँ-बाप,
मजबूर गरीब बच्चियाँ।

नव वर्ष

ऐसा हो नव वर्ष, तुम्हारा आगमन।
सुरभित ज्यों, मधु मास मे उपवन।

अज्ञान तम घटे,अब मनुज का।
भास्कर मन मे ऐसे उगे।
प्रदुषण मुक्त हो, हमारी पवन।
विश्व मे अब, कोई न रोगी रहे।

अंत हो आतंकियो का विश्व से।
आपदाओं के घनें कुहरे छटे।
शेष न रह जाये,कष्ट की सम्भावना।
तरु पात सम सारी, वेदनाएँ झरें।

जननी जने अब राधा, दुर्गा, जानकी।
स्रजन हो प्रेम का, दुष्टों के प्राण शिव हरें।
त्रष्णा मिटे त्रप्त हो, वन खेत आंगन।
घन घना के घटाऐं ऐसे बरसे।

ओढले धानी धरा, फिर हरित ओढनी।
कर्ज से न अब, कोई कृषक मरे।
फहराये धवल ध्वजा, अब हिन्द की।
और उच्च हिमालय शाँति दूत बने।

कूप मंडूक

कूप मंडूक बनकर हम क्या रहे।
उनकी नजरों से सरसरी हो गई।

बदले हमने जीने के तरीके।
उनकी आंखों में किरकिरी हो गई।

आजाद कर दिए रंजो गम सारे।
मैं भी जन्नत की परी हो गई।

सीखा गम खाना जब से।
मैं तन से छरहरी हो गई।

जरा सा हंस हम क्या लिए।
जमाने को मसखरी हो गई।

हटाया खरपतवार मनसे।
जिंदगी हरी भरी हो गई।

बिखरे मोती हमने दृग से।
मोतियों की लड़ी हो गई।

नहा लिए हम खारे पानी से।
काया कुंदन सी खरी हो गई।

इत्तेफाक

तेरे लिए रुके थे हम इत्तेफाक से ।
वरना कारवां मेरा कब का चला गया।

क्यों फिक्र में डूबे हुए थे इस जहान की।
डूबे हुए को फिक्र मेपागल बना दिया।

पत्थर तराश मूरत बनाई थी जमाने में।
तराश कर ए जिंदगी हमें पत्थर बना दिया।

नादान थे गुनाहों को भुलाते चले गए।
कातिल ने मेरा कत्ल सरेआम कर दिया।

किसी से ना कर शिकवा गम गीन ए दिल।
तन्हाईयों से हमने रिश्ता बना कर दिया।

आजादी

अनेकता में एकता भारत की यही विशेषता।
भले पड़ोसी के मातम हो उनके घर तो शादी है ।
क्योंकि सब को आजादी है।

गंगा यमुना स्वर्ग सिधारे जल का संकट पैर पसारे।
कोई तरसता बूंद बूंद को कोई करें बर्बादी है।
क्योंकि सब को आजादी है।

डामर गिट्टी कोई खाता चारा कोई बेचारा खाता।
जनता तो महंगाई खाती वह तो इसकी आदी है ।
क्योंकि सब को आजादी है।

सफेद पोशाके काले कर्म पैसा लेकर बिकना धर्म।
कुर्सी की खींचातानी में उनकी तो बस चांदी है।
क्योंकि सब को आजादी है।

पतझड़ का रहस्य

मोरे पिया गए परदेस,
सखी री मोहे कोयल भौत जरात।

मोरे अंगना में अमुवा को बिरखा,
निशदिन कुहू कुहू गात।
इक पखवारा आवन कह गए,
मास दिवस भऔ जात।

बान कटीले मदन चला रऔ,
बैरी बसंत करें उत्पात।
विरह स्वास से तपे समीरा,
तरुवर भये निपात।

अंग अग्नी सी लपटें निसरे,
वन दहकन लगे पलास।
भला करे तेरो राम पपीहा,
मोहे पिऊ पिऊ नाम सुनात।

अब नहीं रही

घुमंतु परिवार में, भीख के रोजगार में।
वो चलने से लाचार टांगे अब नहीं रही।

रीते घड़े की पहेलियां, दाना खोजती उंगलियां।
वोपेट की पीड़ाये अब नहीं रही।

दिन में लकड़ी बीनना, रात के लिए सहेजना।
वो आग तापती रातें अब नहीं रही।

कलुआ कई दिनों से, आया नहीं शहर से।
वो बेटे को पुकारती कराहे अब नहीं रही।

बाबा की पथ ताकती, अतीत में झांकती।
वो पथरीली आंखें अब नहीं रही।

कलुआ की आस थी, तुषार की रात थी।
वो गुदड़ी में तन ढाकती, कोशिशें अब नहीं रही।

निराशा से भरी थी, सागर से गहरी थी।
वो कच्चे धागे सी लंबी सांसें, अब नहीं रही।

ठंड के रंग बेढंग

लो फिर शीत ऋतु आ गई।
छाया साहैकोहरा कोहरा,
अंधियारा सा पसरा पसरा।
धुंधली सी धुंध छा गई। लो फिर,..

शाखों पर पंछी सहमे सहमे,
कौतूहल से बहमे सहमे।
क्यों दिन में रात आ गई। लो फिर,..

सूरज भी है दुबके-दुबके,
आग ढूंढते चुपके चुपके।
अलाव ताप ने की रितु आ गई। लो फिर,..

पवन देव है पागल-पागल,
शबनम से हैं घायल घायल।
पगलाए पवन पे हंसी आ गई। लो फिर,..

चकवी चकवा खिले खिले,
अभी-अभी थे मिले मिले।
बिछड़ने की कैसी सांझ आ गई। लो फिर,..

नदिया भी हैं बहकी बहकी,
शीत से हो रही सनकी सनकी।
शीतल पेय सागर को पिलाने आ गई। लो फिर,..

ठंड के वेढंग देख देख के,
घर को भागी खेत खेत से।
सूने घर में रजाई चोरी हो गई। लो फिर,..!

चूड़ियाँ

कभी हंसती कभी गाती, कभी मुस्कुराती हैं चूड़ियाँ।
हर लमहे का एहसास, दिलाती है चूड़ियाँ।

हो माथे पे चाहे बेदी, पांव में चाहे पायल।
है अधूरा सिंगार, गर न हो कलाई में चूड़ियाँ।

चूड़ी की खनक खन-खन, पायल की छनक छन-छन।
घरों में घरों का एहसास, दिलाती हैं चूड़ियाँ।

सावन की घटा छाये, साजन की याद आए।
वो प्रथम मिलन की याद, दिलाती हैं चूड़ियाँ।

प्रीतम की पाती पाकर, सखियों के बीच जाकर।
मारे खुशी के शोर, मचाती है चूड़ियाँ।

हमराज जब नाराज हो जाए, बिसरी यादों में आज को जाए।
कलाई में सिमटी रहती, है चुपचाप चूड़ियाँ।

बरखा

गर्मी बीते बरखा आए, आसमान में बादल छाए।
खूब भीगते हम पानी में, अपना मन भी बच्चा होता।

कागज की हम नाव बनाते, इंद्रधनुष के रंग चुराते,
रंग-बिरंगे पानी में फिर, सोचो कितना अच्छा होता।
अपना मन भी,...

बादल के घोड़े पर चढ़ते, सारे जग की सैर करते,
परिंदों संग छुपा छुपाई, आसमान भी अपना होता।
अपना मन भी,..

शाला से हम खूब भागते, काली-काली जामुन खाते,
मां की डांट का भय भी होता, जीवन खट्टा मीठा होता।
अपना मन भी,..

मित्रों से हम खूब झगड़ते, कभी जीतते कभी हारते,
धागे जैसा बेर हमारा, कुछ कच्चा कुछ पक्का होता।
अपना मन भी,..

तितली को हम कभी पकड़ते, जुगनू के पीछे हम भागते,
मुट्ठी में दुनिया भर लेते, सपना अपना सच्चा होता।
अपना मन भी,..

वो दिन

जाने कहां गए वह दिन?
माटी के तवे पर बाजरा की रोटी,
ताजे मक्खन संग गुड़ की भेली होती।
छप्पन भोग सा स्वाद कलेवे में मिलता था। जाने कहाँ,..

खेत में मडवा पर उछलना गोफन चलाना,
अपने खेत के पंछी पड़ोसी खेत में उड़ाना।
शीतल मंद सुगंध में,
हरिया-हरिया का गीत सुनाई पड़ता था। जाने कहाँ,..

आम का पेड़ इस डाली से उस डाली पर,
अंडा डायरी खेलना।
साथी के हारने पर, उठक-बैठक लगवाना।
जीतने पर राष्ट्रपति सा सम्मान मिलता था। जाने कहाँ,..

कूदते फांदते शाला जाना,
बरसाती गड्ढों में कागज की नाव चलाना।
देरी से शाला पहुंचने पर मुर्गा बनना,
रमुआ मुझ पर खूब हंसता था। जाने कहाँ,..

भैया की कमीज अपनी नाप की बनवाना,
पेंट लंबी होने पर नीचे से पलटना,
रंग-बिरंगे कंचे जेब में रखकर,
अपने को धर्मेंद्र समझता था। जाने कहाँ,..

नारी

तुम ही राम कृष्ण अर्जुन तुम ही हो,
तुमसे ही सीता राधा कृष्णा बनेगी।

पानी नहीं मां का दूध पिया है,
क्या दूध का भी कर्ज दिया है।
अगर कर सको नारी रक्षा करो तुम,
माता तुम्हारा सिर चूम लेगी।

दुराचारी खुले घूम रहे हैं,
मासूम कन्याओं पर नजरें गड़ाए।
अगर फांसी उनको तुम दे सको तो,
कलाई में फिर से राखी बंधेगी।

आज की बेटी कल को माता बनेगी,
इनसे ही संसार आगे बढ़ेगा।
अगर रोक दो तुम भ्रूण हत्या,
तुम्हारे घर भी दुल्हन सजेगी।

हमें डर नहीं पाक और चाइना से,
इनके लिए तो फौज में खड़ी हैं।
जयचंदो को अगर मार दो तो,
संयोगिता स्वयंवर चुनेगी।

कभी-कभी

होती नहीं बात है उनसे कभी-कभी।
रहते वो नाराज हैं हमसे कभी-कभी।

जिन घोंसलों से उड़कर बच्चे चले गए,
गौरैया आती रहती उसमें कभी-कभी।

ससुराल से मिलने को आती है बेटियां,
आ जाती है आंगन में रौनक कभी-कभी।

फिर आज मेरा मन बेचौन हो गया,
दीवारें रूठ जाती मुझसे कभी-कभी।

मैं ढूंढ रही थी कि कहां खो गई,
मिलती नहीं हूं मैं खुद से कभी-कभी।

सोचती हूं कि मुड़कर के ना देखूं,
डुबा देता है यादों का समंदर कभी-कभी।

बड़ा सुकून मिलता नहाने के बाद,
आंखों से निकलते हैं झरने कभी-कभी।

यूं तो मैं करती हूं भगवान की पूजा,
रहती है शिकायत भी उनसे कभी-कभी।

नशे ने उजाड़ दी

अपनों से प्रेम करो गफलत से दूर रहो।
नशे ने उजाड़ दी कई जिंदगानियाँ।

भूल गए फर्ज क्या दूध का कर्ज क्या।
छाती से चिपका कर गायी थी लोरियाँ।
दुर्घटना ऐसी घटी माता की छाती फटी।
नशे ने माताओं की उजाड़ दी गोदियाँ।

फेरे जब सात लए जन्मों को साथ भये।
सपने संजोए दुल्हन बैठी जब डोलियाँ।
पत्नी से प्रेम हुआ नशे से लाचार हुआ।
धुल गया सिंदूर और टूट गई चूड़ियाँ।

बाहों का झूला बना तकिया है सीने का।
पिता की दुलारी बहुत होती हैं बेटियाँ।
पिता का जब साया उठा बचपन भी रूठ गया।
घेर घेर घूर रही गिद्धों की टोलियाँ।

संतान मनु कि तुम हो पशुता का त्याग करो।
मनुष्यता होती महान रचो ऐसी कहानियाँ।
नशा सुर का अंत करो हिंद नशा मुक्त करो।
नर बने नारायण तो लक्ष्मी हो नारियाँ।

गुरु आशीष

गुरु के आदर्शों को अपनाओ जीवन में।
शीतल सुषमा सौरभ महकाओ तन मन में।

उंगली पकड़कर चलना माता ने सिखाया है।
गिर कर के फिर उठना पिता ने ही बताया है।
जलाया दीपक गुरु ने अज्ञान अंधेरे में।
गुरु के आदर्शों,...

गुरु कि यदि कटु वाणी हृदय में चुभ जाए।
गुरु का दंडित करना मन में यदि खल जाए
जीवन तेरा सोना है चमकेगा तपाने में।
गुरु के आदर्शों,...

धनार्जन हेतु शायद परदेस में जाना हो।
पिता माता मित्र सारे कोई संग न तेरे हो।
विद्या ही साथी है घनघोर विपत्ति में।
गुरु के आदर्शों,...

करोगे नाम रोशन जग में तुम भारत का।
सपना हम सबका है आशीष है गुरुवार का।
तेरा नाम लिखा होगा इतिहास के पन्नों में।
गुरु के आदर्शों,...

मानव जीवन पथ

ओ मेरी आकांक्षाओं, नन्ही भोली कल्पनाओं।
सदा तुम्हारा दमन किया, मर्दन किया।

सो रही थी तुम, हृदय के किसी कोने में।
कुछ अस्तित्व ना था तुम्हारा, होने में ना होने में।

क्या अधिकार था मुझे, मैं तुम्हें जागृत करूं।
छीन कर तुम्हारे इंद्रधनुषी स्वप्न, तुम्हें आहत करूं।

दोष इतना है तुम्हारा, कि तुम हठी हो।
बेशर्म झाड़ी की तरह, फिर डटी हो।

क्या तुम वंशज हो रक्तबीज की।
या अभिन्न अंग हो मेरी तकदीर की।

क्यों होता है तुम पर बलाघात।
क्यों लगता है मुझे आघात।

अचंभित हूं मैं, बाल्यावस्था से आज तक।
अजीब संघर्षमय है, मानव जीवन पथ।

किसान

हम तो मर गए रे, बिन मौसम की बरसात में ।
कहीं है आंधी, कहीं है तूफां, कहीं है वर्षा भारी।

पेड़ उखड़ गए खंभे गिर गए, बिजली गोल हमारी।
जान बचा के अंदर भागे, छत भी उड़ी हमारी।
ओले पड़ गए रे, खेत और खलिहान में। हम तो.....

पानी भर गयो है खेतन में, गल गई फसलें सारी।
मोड़ी मोड़ा अब का खैहे है, उड़ गई नींद हमारी।
फसल भरोसे ब्याह रचा थो, हो गयो कर्जा भारी।
बिन मारे मर गए रे ,ऊपर वाले की मार में। हम तो.....

मंत्री आए हमरे गांव में, खेतन खेतन फिर गए।
पूरा पैसा सबको मिल है, वादा हमसे कर गए।
अधिकारी तो रिश्वत मांगे, हम अचरज में पड़ गए।
हम तो गिर गए रे, अधिकारी के द्वार में। हम तो.....

तुम ही हमारे देवी देवता, तुम ही पालनहार।
बीच भंवर में नैया डूबी, तुम ही खेवन हार ।
अधिकारी ने कलम चला दई, हो गई जय जय कार ।
पैसा बँट रयो रे, अधिकारी के दरबार में। हम तो.....

बेटी की बिदाई

आज मेरी बेटी की विदाई हो गई।

कल ही गुथी थी उसकी चोटी,
लगाया था ढिटोना।
आज ऐसी नजर लगी, वह सयानी हो गई।

कल दिखाया था चंदा मामा,
बतियाई थी वह तारों से।
आज उसकी मांग, सितारों से भर गई।

कल ही लाई थी वह गुड़िया,
रचाया था गुड्डे का ब्याह।
आज उसकी ही, सगाई हो गई।

खेल खेल में गिरने पर, कल ही पोंछे थे उसके आंसू।
आज उसकी आंखों में,
गंगा जमुना सी बाढ़ आ गई।

कल तक फुदकती थी, नन्ही चिड़िया सी आंगन में।
मेरी बगिया की बुलबुल,
परंपराओं के पिंजरे में कैद हो गई।

पुण्य के लालच में शायद, यूं ही कर दिया कन्यादान।
मुझे क्या पता था,
एक पल में बेटी पराई हो गई ।

मध्यप्रदेश

जा धरती है मेहनती किसान की,
करें पूजा खेत खलिहान की।

जाको विंध्याचल सो भाल, पचमढ़ी अमरनाथ सो हाल।
उज्जैनी बैठे हैं महाकाल, चित्रकूट में महिमा राम की।
करे पूजा.....

इते नर्मदा को कल कल गान , मिले क्षिप्रा में पुण्य महान।
मीठी है चंबल की तान, सोनभद्र पठारो की शान री।
करें पूजा.....

इते की खनिज संपदा खास, ओढ़े हरी चुनरिया बारह मास।
आदि कला बुलावे पास ,धूम मच रही राही की तान की।
करे पूजा.....

उनने खूबई करी लडाई, दुश्मन खो ऐसी धूल चटाई।
रानी दुर्गावती अवंती बाई, वीर गाथा है उनके बलिदान की।
करे पूजा....

देश को प्यारो मध्यप्रदेश, देश को न्यारो मध्यप्रदेश।
देश को हृदय मध्यप्रदेश, बोली हिन्दी जा हमरे प्रान सी।
करे पूजा.....!

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - श्रीमती हेमलता शर्मा

जन्म - १०/१०/१९६५

शिक्षा - एम.ए. हिंदी साहित्य

पता - हेमलता राजेंद्र शर्मा

मु.पो.- साईं खेड़ा केशवानंद नगर, तह.- गाडरवारा, जिला- नरसिंहपुर, मध्यप्रदेश

ईमेल - sharmahemlata12345@gmail.com

प्रकाशन - अन्तरा शब्द शक्ति की मासिक पत्रिका 'सृजन शब्द से शक्ति का' एवं लोकजंग समाचार पत्र में रचनाएँ प्रकाशित

सम्मान - व्हाट्सअप फेसबुक के अनेक समूहों से सम्मान एवं प्रेरणा प्राप्त।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-062-9
मूल्य 60/-
शब्द सुगंध